International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: RJIF 5.7
IJLE 2024; 4(2): 01-03
www.educationjournal.info
Received: 01-05-2024
Accepted: 04-06-2024

डॉ. पुष्पराज सिंह
सहा.प्राध्यापक शिक्षा, टाटा एजुकेशन कालेज सीधी, मध्यप्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. पुष्पराज सिंह
सहा.प्राध्यापक शिक्षा, टाटा एजुकेशन कालेज सीधी, मध्यप्रदेश, भारत

सीधी जिले में उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति की स्थिति व मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अध्ययन

डॉ. पुष्पराज सिंह

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र सीधी जिले में उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति की स्थिति व मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता के अध्ययन पर आधारित है। शिक्षा के हक को पूरी तरह से उपलब्ध करवाने के लिए और भी महत्वपूर्ण कदम उठाने की जरूरत होती है। इनमें से एक कदम है शिक्षा के लिए छात्रवृत्तियां दिया जाना। मध्यप्रदेश में अभी की स्थिति में 9 सरकारी विभाग 30 तरह की छात्रवृत्तियां प्रदान करते हैं। मकसद यह है कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, लड़कियां, विकलांगता से प्रभावित बच्चों, सामाजिक – रिवारिक समस्यायों से प्रभावित बच्चों को शिक्षा के साथ जोड़ने के लिए प्रोत्साहन की व्यवस्था हो। यह बच्चों का हक है और राज्य की जिम्मेदारी है। मध्य प्रदेश में एमडीएम कार्यक्रम का क्रियान्वयन 1995 से प्रारंभ किया गया है। (भोजन कच्चे खाद्यान्न के रूप में दिया जाता था) 2001 में, दलिया और खिचड़ी को पके हुए भोजन के रूप में वितरित किया गया था। 2004 से, भोजन दिलचस्प मेनू के अनुसार परोसा जा रहा है। शोध क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव है।

कूटशब्दः सीधी जिला, उच्च प्राथमिक स्तर, छात्रवृत्ति एवं मध्यान्ह भोजन

प्रस्तावना
बच्चे के सीखने की प्रक्रिया मॉ के गर्भ से ही प्रारंभ हो जाती है। जन्म के समय वह अपनी पांचों इंद्रियों के विकास के साथ पैदा होता है। अर्थात् रोकर वह बताता है कि उसके अंदर बोलने की क्षमता है। दुलार करने पर चुप होना इस बात की पहचान है कि वह स्पर्श की भाषा समझता है। शोर या तेज आवाज सुनकर रोना इस बात की ओर संकेत करता है कि वह सुन सकता है। इसी प्रकार उसकी आंखे और जिव्हा भी प्रतिक्रिया करती है।
जन्म के पश्चात् 03 वर्ष तक बच्चा अपने परिवार के वातावरण से सीखता है। इसलिए परिवार एवं समुदाय की सहभागिता आवश्यक है। 03 वर्ष के बाद समुदाय तथा सम–आयु बच्चों के साथ सीखने की आवश्यकता होती है। बच्चों के सर्वांगीण विकास में अभिभावक, परिवार तथा समुदाय की महत्वपूर्ण सहभागिता होती है।
शिशु विकास तेज गति से होने वाली एक निरंतर प्रक्रिया है, विकास का पहला चरण उसके क्रमिक विकास को प्रभावित करता है। स्वास्थ्य, पोषण की पर्याप्त सुविधाएं और वांछित मनोसामाजिक परिवेश बच्चे की सीखने एवं विकास की आवष्यकताऐं पूरी करने के लिए अनुकूल (इनेबलिंग) वातावरण बनाते हैं। एक ऐसे वातावरण का निर्माण जहां बच्चे को सुनने, बोलने तथा अभिव्यक्ति का मौका मिलता है, बच्चे अपनी मर्जी से संसाधनों का स्वयं उपयोग करके सीखते हैं इस समय यह जरूरी है कि देखभालकर्ता/शिक्षक बच्चों को सही दिशा प्रदान कर सकें। बच्चों के प्रारंभिक वर्षो में यदि उत्प्रेरक गतिविधियां, संसाधन, पोषण आहार और सकारात्मक परिवेश उपलब्ध कराया जाए तो प्रत्येक व्यक्ति भावी वर्षो में अपनी अधिकतम क्षमताओं को प्राप्त कर सकता है। निश्चित ही प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा भावी जीवन का स्थाई आधार है।
मानव सभ्यता के आरंभ से ही मानव जीवन की तीन अत्यधिक महत्वपूर्ण आवश्यकताएं रही हैं – पैसा, रोटी, कपड़ा और मकान। इन महत्वपूर्ण आवश्यकाताओं में से सबसे महत्वपूर्ण भोजन है। भोजन की आवश्यकता की पूर्ति के लिए मनुष्य ने क्या नहीं किया है। देश के निम्न आयवर्ग वाले व्यक्तियों के अधिकांश बच्चे प्राथमिक विद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रहें। एक सर्वे द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि आर्थिक रूप से पिछड़े और कमजोर परिवारों के 60 प्रतिशत बच्चे प्रातःकाल बिना भोजन किये विद्यालयों में पढ़ने जाते हैं, इनमें से 15.3 प्रतिशत बच्चे स्कूली शिक्षा पूर्ण करने में पूर्व ही विद्यालय छोड़ देते है। भोजन की इसी आवश्यकता को देखते हुए देश की स्वतंत्रता के बाद अनेक प्रयास किये गये हैं। मध्यप्रदेश शासन द्वारा भी छात्रवृत्ति और मध्यान्ह भोजन योजना का नाम दिया है। इसी जिज्ञाशा से शोधार्थी ने सीधी जिले में उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति की स्थिति व मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता की स्थिति जानने का प्रयास किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. सीधी जिले में आदिवासी क्षेत्रों के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में आदिवासी बच्चों को उच्च प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने की गति का अध्ययन करना।
2. जिले में आदिवासी क्षेत्रों के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की शैक्षणिक सुविधाओं का उचित उपयोग न करने का व उचित लाभ न उठाने के कारणों का अध्ययन करना।
3. शिक्षा अध्ययन में रुचि न लेना शाला से पलायन करना अथवा गैरहाजिर रहना।
4. शालाओं में क्रीड़ा प्रतियोगिता या खेल को महत्व न देना।

शोध परिकल्पना

शैक्षिक अनुसंधान में समस्या चयन के बाद परिकल्पनाओं की रचना शोध प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है। परिकल्पना से समस्या समाधान को उचित दिशा निर्धारित होती हैं परिकल्पनाओं द्वारा अनुसंधानकर्ता को तर्क संगत आंकड़ों के संकलन में ठीक दिशा मिलती है। भौतिक विज्ञानों में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नानुसार हैः–

1. "सीधी जिले में उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव है।"

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र जिला सीधी है। इसके अन्तर्गत 6 विकासखण्ड – गोपदबनास, चुरहट, रामपुर नैकिन, मझौली, कुसमी और सिहावल हैं।

समष्टि व प्रतिदर्श

इस अध्ययन की समष्टि में सीधी जिले के 06 विकासखण्डों से (प्रत्येक विकासखण्ड से 05 विद्यालय अर्थात कुल 30 विद्यालय) 30 संस्था प्रमुख, 60 शिक्षक, 60 अभिभावक व 300 छात्रों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से शोधार्थी ने अपने शोध के लिये चुना है।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न शोध विधियों का चयन किया गया है–

सर्वेक्षण अध्ययन विधि

सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।

साक्षात्कार विधि

शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।

साख्यिकीय विधि

सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियाँ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., Chisquare test, 'T' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से शर्मा (2007)[1], मंगल (2005)[2], पाठक (20013)[3], गुप्ता (1997)[4], भोलेराव (2015)[5], त्रिपाठी (2007)[6] एवं प्रसाद गोमती (2009)[7] ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

शोध उपकरण

स्वनिर्मित प्रश्नावली द्वारा शिक्षक, प्रधानाध्यापक, अभिभावक व छात्रों से साक्षात्कार व प्रश्नावली के माध्यम से ज्ञात किया गया है।

शोध क्षेत्र का परिचय

सीधी जिला म.प्र. की राजधानी भोपाल से उत्तर पूर्वी दिशा में सड़क मार्ग से 635 किलो मीटर दूर है तथा रीवा संभाग के मुख्यालय से दक्षिण पूर्व में 80 किलोमीटर पर जिला मुख्यालय स्थित है। जिला सीधी मूलतः पठारी व पर्वतीय प्रदेश है इसका विस्तार $23^{\circ}47'$ से $24^{\circ}42'$ उत्तरी अक्षांश तथा $81^{\circ}18'$ से $82^{\circ}49'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य में स्थित है।

जिला सीधी मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्व क्षेत्र में स्थित है। यह प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है। इसके पूर्व में उत्तर प्रदेश का मिर्जापुर तथा सोनभद्र जिला, दक्षिण में छत्तीसगढ़ राज्य का कोरिया जिला पश्चिम में शहडोल तथा सतना जिला एवं उत्तर में रीवा व मऊगंज जिला स्थित है। जिले की समुद्र तल से निम्नतम ऊँचाई 243.84 मी. तथा उच्चतम ऊँचाई 609.60 मी. है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 10526 वर्ग कि.मी. है। यह जिला पूर्व से पश्चिम 155 कि.मी. तथा उत्तर से दक्षिण 95 कि.मी. फैला हुआ है। क्षेत्रीयता की दृष्टि से यह जिला भारत के कुल भू–भाग का 0.37 प्रतिशत है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1: उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का			
			अभाव है		अभाव नही है	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	संस्था प्रमुख	30	26	86.67	04	13.33
2.	शिक्षक	60	49	81.67	11	18.33
3.	अभिभावक	60	46	76.67	14	23.33
4.	छात्र	300	236	78.67	64	21.33
योग		450	357	79.33	93	20.67

स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 83.33 प्रतिशत संस्था प्रमुख, 76. 67 प्रतिशत शिक्षक, 61.67 प्रतिशत अभिभावक व 76.17 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव है और शोध क्षेत्र के 38.33 प्रतिशत अभिभावक व 23. 83 प्रतिशत छात्र, 23.33 प्रतिशत शिक्षक व 16.67 प्रतिशत संस्था प्रमुख यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव नही है।

सांख्यिकीय विष्लेशण
काई वर्ग की गणना

आवृत्ति	अभाव है	अभाव नही है
F_o	79.33	20.67
F_e	50.00	50.00
F_o-F_e	29.33	-29.33
$(F_o-F_e)^2$	860.25	860.25
$\frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$	17.20	17.20

$$\chi^2 = \sum \frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$$

$\chi^2 = 34.40$

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेषित किया गया। गणना द्वारा χ^2 का मान 34.40 है, जबकि तालिकामान 1df पर तथा 0.05 व 0.01 level पर 3.84 व 6.63 है। गणना मान अधिक होने के कारण सार्थक है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि सीधी जिले में उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रवृत्ति का समय पर न मिलना, मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का अभाव पाया गया है।

संदर्भ

1. शर्मा, राजकुमारी, श्रीवास्तव एस.बी.एन., दुबे, एस.के. (2007)–भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें। राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
2. मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा (2005) – विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, लायल बुक डिपो.
3. पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. (2013) – अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
4. गुप्ता, एस.पी. (1997) : सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.
5. भालेराव, चन्द्रकान्ता एवं श्रीवास्तव, आशा (2015) – माध्यमिक स्तर पर मध्यप्रदेश में आदिवासी शिक्षा का विकास, रिसर्च लिंक, 135 Vol. XIV(4), pp. 117-118.
6. त्रिपाठी रेणु एवं त्रिपाठी, अर्पणा (2007), भारत में प्राथमिक शिक्षा, प्रथम संस्करण, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
7. प्रसाद, गोमती (2009), रीवा संभाग की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन, पी–एच.डी. शिक्षा, अ.प्र.सिंह वि.वि., रीवा